निषाद समाज की हुंकार

चिंतनशील साथ बढ़ेगा — समाज विकास गढ़ेगा!
सोच नहीं अब संकल्प चाहिए —
निषाद को अधिकार चाहिए!
बिखराव छोड़ो — संगठन जोड़ो!
एकता का नारा — निषाद हमारा!
न झुके थे, न झुकेंगे —
अधिकार लेकर रहेंगे!
इतिहास गवाह है —
निषाद सदा साहस है!
शब्द नहीं अब कर्म चाहिए!
काग़ज़ नहीं — मैदान चाहिए!
शिक्षा हमारा शस्त्र बने!
संगठन हमारा अस्त्र बने!
गंगा की धारा — निषाद पुकारा!
समाधान–लोचन — शौर्य की मशाल!
IAS–IPS तक जाएंगे!
संसद–सचिवालय गूंजाएंगे!
आरक्षण हमारा हक है!
सम्मान हमारा हक है!
ज्यों-ज्यों चिंतनशील बढ़ेंगे!
त्यों-त्यों क्रांति रचेंगे!
निषाद जागा — देश जागा!
निषाद एकता — देश की शक्ति!
जय निषाद! जय संगठन! जय संघर्ष!

\- --प्रो लक्ष्मण कुमार
राष्ट्रीय उपाध्यक्ष VIP.

इस पत्रक के लिए सहयोग राशि मात्र 10 रूपये ट्रस्ट में दान करें।

निषाद पर्सनल लॉ की कापी प्राप्त करने के लिए निषाद समाज की सदस्यता संस्था के क्यू आर कोड पर 100/रूपये भेजकर उसके इवेंट आइडी के साथ संस्था के पते .या मोबाइल नं पर भेजिए। पीडीएफ तत्काल आपके मोबाइल पर भेज दिया जायेगा। हार्ड कापी यदि चाहते हैं तो रजिस्टर्ड डाक का शुल्क भेजने पर आपके पते पर भेजा जा सकेगा।

निषाद समाज (ट्रस्ट)

कार्यालय निषाद समाज (ट्रस्ट)
22582/01, पवित्र नगर, लालकुआँ, पोस्ट पोली पाथर, ग्वारीघाट रोड, जिला जबलपुर, मध्यप्रदेश पिन कोड 482008

Phone: 9755013821
E-mail: nishad.pariwar.samaj@gmail.com

निषाद समाज (ट्रस्ट)

निषाद जागरण 2
प्रो लक्ष्मण साहनी

जागों निषाद नाम की हस्ती, खूशहाल कर दो हर गाँव हर बस्ती।

Mob 7897314809

निषाद जागरण 2

"निषाद पर्सनल लॉ" कोई जिद नहीं,
यह इतिहास की हुंकार है,
जल,जंगल,धरती के पुत्रों की,
यह न्याय की तलवार है।
संविधान की मर्यादा में,
निषाद स्वाभिमान खड़ा हुआ,
अपने अधिकार, अपने संस्कार,
कानूनी दीप आज जला हुआ।
हिंदू–मुस्लिम की भाँति ही,
निषाद का भी स्वर मुखर है,
पर्सनल लॉ के पृष्ठों में,
इतिहास आज फिर प्रखर है।
छप्पन पृष्ठ, सत्तासी पैरा,
तीस नियम, अध्याय आठ,
बुद्धि, विवेक, विधि के संग,
रचा गया यह सामाजिक पाठ।
कौन निषाद, कौन नहीं है—
स्पष्ट किया है सत्य विधान,
जीवन, प्रकृति, संगीत में
निषाद का अमर पहचान।
भोर की लाली, दीप की ज्योति,
हृदय की धड़कन, स्वर निषाद,
दर्शन बना यह जीवन पथ,
नहीं किसी से बैर–विवाद।
शासन व्यवस्था, कर्तव्य–अधिकार,
पदाधिकारी, उत्तरदायित्व,
समाज चले संगठित होकर,
यही तो है इसका वास्तविक अर्थ।
विद्वानों की सोच, अधिवक्ता का बल,
संविधान की रक्षा ढाल,
निषाद संजीव नगर के हाथों,
रचा गया यह न्याय कमाल।
पढ़ो, समझो, सोचो भाई,
अच्छा लगे तो हाथ बढ़ाई,
राष्ट्रव्यापी निषाद संगठन को,
अपने श्रम से और सुदृढ़ करो।
असहमति भी है अधिकार तुम्हारा,
सम्मान सभी का एक समान,
यह आदेश नहीं, यह आग्रह है—
यही लोकतंत्र की पहचान।
शुक्रवार, रविवार संवाद का क्षण,
ऑनलाइन विचारों की धार,
शंका, प्रश्न सब होंगे शांत,
जब जागेगा निषाद विचार।
उठो निषाद! यह समय पुकारे,
कलम, क़ानून, चेतना साथ,
वीर बनो, विवेक संभालो,
न्याय–स्वाभिमान हो हाथ में हाथ।

जय निषाद!जय भारत! जय संविधान !

--- प्रो लक्ष्मण कुमार

□"जागो निषाद!"□
अब नहीं सहना अपमान का बोझ,
अब नहीं ढोना पराधीनता का रोज़।
जिनकी नदियों पर हमने पसीना बहाया,
उन्हीं ने हमें दास कह कर ठुकराया।
हम नाविक थे, हम योद्धा थे,
सभ्यता के पहले पहरेदार थे।
आज भी जल, जंगल, ज़मीन हमारी,
पर सत्ता की मेज़ पर जगह तुम्हारी!
किताबों ने हमें चुप रहना सिखाया,
मंदिरों ने हमें डर में बाँध कर रखा।
पर अब चेतना की तलवार उठेगी,
हर अंधविश्वास की जंजीर कटेगी।
न ब्राह्मण का पिछलग्गू बनेंगे,
न किसी के चरणों में सिर रखेंगे।
हम अपने भाग्य के शिल्पकार हैं,
हम निषाद हैं — इतिहास के अधिकार हैं!
अब शिक्षा होगी शस्त्र हमारा,
विज्ञान बनेगा विचार हमारा।
रोज़गार हमारी ढाल बनेगा,
आत्मसम्मान हर हाल बनेगा।
उठो मछुआरों, उठो नाविकों,
उठो नदियों के रखवालों!
अब समय है सत्ता माँगने का,
न्याय नहीं — अधिकार लेने का!
जो हमें सदियों दबाते आए,
आज वही हमसे डरने आए।
क्योंकि जाग चुका है निषाद समाज,
अब बदलेगा इतिहास!
जय आत्मसम्मान!
जय निषाद चेतना!

प्रो लक्ष्मण कुमार

□निषाद —

जीवन की पहली पहचान□
(अपने आप को पहचाने)
जल की गोद में जब जीवन मुस्काया,
लहरों ने पहला गीत सुनाया।
मछली बनी जीवन की पहली थाली,
नदी ने मानव को राह दिखा डाली।
जिस हाथ ने जाल पहली बार डाला,
उसने भूख को जीत में बदला।
वही हाथ, वही साहस, वही स्वाद —
वही कहलाया निषाद।
राजा बाद में बने, सिंहासन बाद में आए,
पहले तो नाविक थे, जो राह बनाएं।
जंगल, नदी, पर्वत के संवाद में
सभ्यता जन्मी निषाद के स्वभाव में।
तुम जिसे आज हाशिये पर रखते हो,
वह इतिहास की नींव था।
तुम जिसकी पहचान मिटाते हो,
वही जीवन का आदि स्वप्न था।
निषाद कोई नाम नहीं,
एक युग की पुकार है —
जहाँ पानी था, जीवन था,
और मानव की पहली सरकार है।

प्रो लक्ष्मण कुमार□□□